गोल

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» मेजर ध्यानचंद -- साधारण सिपाही से 'हॉकी के जादूगर' तक

» मैदान की घटना -- गुस्से का जवाब खेल-कौशल से

» बर्लिन ओलंपिक 1936 -- स्वर्ण पदक और सच्ची टीम भावना

» सफलता का मंत्र -- लगन, साधना और खेल भावना

» कठिन शब्द -- सूबेदार, छावनी, लांस नायक, रेजिमेंट

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. ध्यानचंद को हॉकी खेलने के लिए किसने प्रेरित किया, और शुरुआत में उनकी दिलचस्पी कैसी थी?

› पाठ के अनुसार, शुरुआत में हॉकी में ध्यानचंद की कोई दिलचस्पी नहीं थी
› उनकी रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी बार-बार उन्हें हॉकी खेलने के लिए कहते थे
› धीरे-धीरे अभ्यास से उनके खेल में निखार आता गया

उत्तर – सूबेदार मेजर तिवारी ने ध्यानचंद को हॉकी खेलने के लिए बार-बार प्रेरित किया, जबकि शुरुआत में उनकी हॉकी में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी।

उदाहरण 2. ध्यानचंद ने अपने सिर पर हॉकी स्टिक मारने वाले खिलाड़ी से 'बदला' कैसे लिया, और खेल के बाद उन्होंने उसे क्या सीख दी?

› ध्यानचंद ने मैदान में लौटकर उस खिलाड़ी से कहा कि वे बदला लेंगे
› उन्होंने झटपट छह गोल दागकर अपनी बात सच कर दिखाई -- यह उनका 'बदला' था
› खेल के बाद उन्होंने खिलाड़ी को समझाया कि खेल में गुस्सा करना अच्छी बात नहीं

उत्तर – ध्यानचंद ने बदले में हिंसा नहीं, बल्कि छह शानदार गोल दागकर जवाब दिया, और बाद में उस खिलाड़ी को प्यार से समझाया कि खेल में गुस्सा करना ठीक नहीं।

उदाहरण 3. बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद की खेल भावना किस बात से पता चलती है?

› उन्होंने खुद बताया कि गोल करने का मौका होते हुए भी वे गेंद साथी खिलाड़ी को दे देते थे
› ऐसा वे इसलिए करते ताकि साथी को भी गोल करने का श्रेय मिले
› उन्होंने यह भी कहा कि हार-जीत उनकी नहीं, पूरे देश की होती है

उत्तर – ध्यानचंद की खेल भावना इस बात से पता चलती है कि वे गोल का मौका होते हुए भी साथियों को गेंद देते थे और मानते थे कि जीत-हार व्यक्तिगत नहीं, पूरे देश की होती है।

उदाहरण 4. ध्यानचंद के अनुसार सफलता के तीन सबसे बड़े मंत्र कौन-से हैं, और उनका क्या अर्थ है?

› ध्यानचंद कहते हैं उनके पास कोई गुरु-मंत्र नहीं, सिर्फ़ तीन बातें हैं
› पहला - लगन (काम में दिल से जुट जाना)
› दूसरा - साधना (लगातार अभ्यास करते रहना)
› तीसरा - खेल भावना (ईमानदारी और सही तरीके से खेलना)

उत्तर – ध्यानचंद के अनुसार सफलता के तीन मंत्र हैं -- लगन, साधना और खेल भावना, जिनका अर्थ है दिल से मेहनत करना, लगातार अभ्यास करना, और ईमानदारी से काम करना।

उदाहरण 5. 'सूबेदार' और 'लांस नायक' में क्या अंतर है?

› पाठ्यपुस्तक के अनुसार 'सूबेदार' स्वतंत्रता से पहले भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था

› 'लांस नायक' भारतीय सेना का एक अलग, सामान्य पद (रैंक) है

› दोनों सेना के अलग-अलग स्तर के पद हैं

उत्तर – 'सूबेदार' एक बड़ा सैन्य-अधिकारी पद था, जबकि 'लांस नायक' सेना का एक सामान्य पद (रैंक) है -- दोनों अलग स्तर के पद हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• जन्म वर्ष (1905) और सेना में भर्ती की उम्र (16 वर्ष) जैसी तिथियाँ अक्सर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में पूछी जाती हैं -- याद रखें।

• इस घटना का क्रम (पहले चोट, फिर पट्टी, फिर मैदान में लौटना, फिर छह गोल, फिर सीख) सही क्रम में लिखना ज़रूरी है -- क्रम बिगाड़ने पर अंक कट सकते हैं।

• 'ध्यानचंद की खेल भावना का उदाहरण दीजिए' जैसे प्रश्न में गोल साथी को देने वाली बात ज़रूर लिखें -- यह सबसे मुख्य उदाहरण है।

• 'सफलता के मंत्र' वाला प्रश्न सीधे पाठ की पंक्ति से पूछा जाता है -- तीनों शब्द (लगन, साधना, खेल भावना) क्रम में और सही वर्तनी के साथ लिखें।

• शब्दार्थ वाले प्रश्नों में सैन्य-शब्दों (सूबेदार, छावनी आदि) का सही और सटीक अर्थ लिखें, अनुमान से न लिखें।

एक नज़र में रिवीज़न

› ध्यानचंद - जन्म 1905, प्रयाग; 16 वर्ष की उम्र में सिपाही; सूबेदार तिवारी ने हॉकी के लिए प्रेरित किया।

› 1933 की घटना: सिर पर स्टिक लगने के बाद ध्यानचंद ने छह गोल दागकर 'बदला' लिया, फिर विरोधी खिलाड़ी को गुस्से से बचने की सीख दी।

› 1936 बर्लिन ओलंपिक, कप्तान ध्यानचंद, टीम भावना (साथी को गोल का मौका), स्वर्ण पदक, 'जीत-हार देश की होती है'।

› सफलता का मंत्र: लगन (मेहनत का जज़्बा) + साधना (निरंतर अभ्यास) + खेल भावना (ईमानदारी)।

› रेजिमेंट=सेना का दल, छावनी=रहने की जगह, सूबेदार=बड़ा पद, लांस नायक=सेना का एक पद।